Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 3 | MARCH 2024

यूरोपीय संघ के विघटन के कारण: एक विश्लेषण

रविन्द्र जोशी [1]

[1] **पोस्ट गेस्ट फैकल्टी असिस्टेंट प्रोफेसर गवर्नमेंट कॉलेज बागोड़ा, राजस्थान.**

ABSTRACT:

यूरोपीय संघ (EU) एक अद्वितीय राजनीतिक और आर्थिक एकीकरण मॉडल का प्रतिनिधित्व करता है, जो विभिन्न राष्ट्रों को एक ही ढांचे के तहत एक साथ लाता है। हालांकि, हाल के वर्षों में, EU को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिससे उसकी स्थिरता और दीर्घायु को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं। यह शोध पत्र उन अंतर्निहित कारणों का पता लगाता है जो यूरोपीय संघ के विघटन को खतरे में डालते हैं। इसमें आर्थिक असमानताओं, राजनीतिक संप्रभुता के मुद्दों, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान, आव्रजन और सीमा नियंत्रण, और बढ़ते लोकलुभावनवाद और राष्ट्रवाद की जांच की जाती है। इस व्यापक विश्लेषण के माध्यम से, यह पत्र समझने का प्रयास करता है कि ये कारक कैसे EU के भीतर तनाव में योगदान करते हैं, जिससे संभावित रूप से इसके विघटन का मार्ग प्रशस्त होता है। यह विश्लेषण ऐतिहासिक और समकालीन स्रोतों पर आधारित है, जिसमें ब्रेक्सिट जैसे प्रमुख घटनाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है, ताकि यूरोपीय एकीकरण के भविष्य के लिए व्यापक निहितार्थ को स्पष्ट किया जा सके।

KEYWORDS:

यूरोपीय संघ, विघटन, आर्थिक असमानता, राजनीतिक संप्रभुता, राष्ट्रीय पहचान, आव्रजन, लोकलुभावनवाद, ब्रेक्सिट, एकीकरण, राष्ट्रवाद।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th March 2024	30th March 2024

विषय वस्तु

1993 में मास्ट्रिच संधि के साथ स्थापित यूरोपीय संघ को एकता, आर्थिक समृद्धि और राजनीतिक स्थिरता का प्रतीक माना गया था। यह एक सर्वोच्च राष्ट्रीय इकाई है जिसमें 27 सदस्य राज्य शामिल हैं, जिनकी नीतियाँ आर्थिक एकीकरण, एकल बाजार और एक सामान्य मुद्रा, यूरो, को समाहित करती हैं। हालांकि, संघ को हाल के वर्षों में बढ़ती आंतरिक और बाहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिससे उसकी भविष्य की एकता के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं। यूरोपीय संघ के भीतर विघटन की संभावना केवल एक काल्पनिक अवधारणा नहीं है; यह 2020 में यूनाइटेड किंगडम के बाहर निकलने (ब्रेक्सिट) के साथ वास्तविकता बन गई। यह पत्र उन बहुआयामी कारणों में गहराई से उतरने का प्रयास करता है जो यूरोपीय संघ के विघटन को खतरे में डालते हैं।

आर्थिक असमानताएँ

सदस्य राज्यों के बीच आर्थिक असमानता EU की एकजुटता को खतरे में डालने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। EU में विभिन्न स्तरों के आर्थिक विकास वाले देश शामिल हैं, जैसे कि जर्मनी और फ्रांस जैसी समृद्ध अर्थव्यवस्थाएं और ग्रीस और पुर्तगाल जैसी कमजोर अर्थव्यवस्थाएं। 2009 में शुरू हुए यूरोज़ोन संकट ने इन असमानताओं को उजागर किया, जिसमें आर्थिक रूप से कमजोर देशों को मजबूत अर्थव्यवस्थाओं से बड़े पैमाने पर बेलआउट की आवश्यकता थी। बेलआउट की शर्तों के तहत लगाए गए सख्त उपायों के कारण ग्रीस, स्पेन और इटली जैसे देशों में व्यापक सार्वजनिक असंतोष और सामाजिक अशांति फैल गई। ये आर्थिक असमानताएँ अन्य सदस्य राज्यों के बीच एक अनुचित प्रणाली की धारणा को बढ़ावा देती हैं, जिससे तनाव और असंतोष पैदा होता है।

राजनीतिक संप्रभुता और राष्ट्रीय स्वायत्तता

राष्ट्रीय संप्रभुता बनाम यूरोपीय संप्रभुता का सवाल संघ के भीतर एक केंद्रीय तनाव है। कई सदस्य राज्य महसूस करते हैं कि यूरोपीय संघ के बढ़ते एकीकरण से उनकी राष्ट्रीय संप्रभुता कम हो रही है, जिससे उनके स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता सीमित हो रही है। EU की नियामक रूपरेखा और निर्णय लेने की प्रक्रिया अक्सर सदस्य राज्यों से EU संस्थानों को राष्ट्रीय नियंत्रण के कुछ हद तक त्याग करने की मांग करती है। इससे यूरो-विरोधी भावनाओं में वृद्धि हुई है, जहां राजनीतिक दल और आंदोलन राष्ट्रीय संप्रभुता की पुनः प्राप्ति की वकालत करते हैं। ब्रेक्सिट जनमत संग्रह अभियान में "ब्रुसेल्स से नियंत्रण वापस लेने" के बारे में तर्क प्रमुखता से सामने आए, जो EU ढांचे के भीतर राष्ट्रीय स्वायत्तता के क्षरण के बारे में व्यापक चिंताओं को दर्शाता है।

सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान

सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान यूरोपीय संघ की एकता को प्रभावित करने वाला एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा है। EU एक पैन-यूरोपीय पहचान को बढ़ावा देता है, लेकिन यह अक्सर गहराई से निहित राष्ट्रीय पहचानों के साथ संघर्ष करता है। कई यूरोपीय लोग खुद को पहले अपने राष्ट्र के रूप में पहचानते हैं, न कि यूरोपीय के रूप में। सामान्य नीतियों और विनियमों को लागू करने को कभी-कभी एक समरूप यूरोपीय संस्कृति के पक्ष में राष्ट्रीय पहचानों को कमजोर करने के प्रयास के रूप में देखा जाता है। विशिष्ट भाषाओं, परंपराओं और सांस्कृतिक प्रथाओं वाले देश ऐसी EU-व्यापी पहलों का विरोध कर सकते हैं जिन्हें उनकी राष्ट्रीय विशिष्टता को कमजोर करने वाला माना जाता है। राष्ट्रीय और यूरोपीय पहचान के बीच इस संघर्ष से आगे के एकीकरण का विरोध हो सकता है और EU के भीतर असहमति पैदा हो सकती है।

आव्रजन और सीमा नियंत्रण

आव्रजन और सीमा नियंत्रण EU के भीतर विवादास्पद मुद्दे रहे हैं, खासकर 2015 के शरणार्थी संकट के आलोक में। EU का शेंगेन क्षेत्र, जो सदस्य राज्यों की सीमाओं के पार मुक्त आवाजाही की अनुमति देता है, आव्रजन प्रवाह को प्रबंधित करने के लिए सदस्य राज्यों के संघर्ष के रूप में दबाव में आ गया है। संघर्षग्रस्त क्षेत्रों से शरणार्थियों और प्रवासियों की आमद ने सुरक्षा, सामाजिक एकीकरण और आर्थिक दबाव के बारे में चिंताएं बढ़ा दी हैं। हंगरी, पोलैंड और इटली जैसे देशों ने कठोर आव्रजन नीतियां और सीमा नियंत्रण अपनाए हैं, जो अक्सर EU दिशानिर्देशों की अवहेलना में होते हैं। आव्रजन नीतियों में यह भिन्नता इस तरह के विभाजनकारी मुद्दे पर एक एकीकृत रुख बनाए रखने की चुनौतियों को उजागर करती है, जिससे आंतरिक तनाव बढ़ता है।

लोकलुभावनवाद और राष्ट्रवाद का उदय

पूरे यूरोप में लोकलुभावन और राष्ट्रवादी आंदोलनों का उदय EU की स्थिरता के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा करता है। लोकलुभावन पार्टियां अक्सर EU की आलोचना करती हैं,

इसे आम नागरिकों की चिंताओं से दूर एक अभिजात्य संस्था के रूप में चित्रित करती हैं। वे यूरोपीय एकीकरण पर राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देने वाली नीतियों की वकालत करते हैं। इटली, फ्रांस और हंगरी सहित पूरे यूरोप में चुनावों में लोकलुभावन पार्टियों की सफलता EU के प्रति बढ़ती निराशा को दर्शाती है। लोकलुभावनवाद की अपील इसके उस वादे में निहित है जो वैश्वीकरण और आव्रजन से उत्पन्न कथित खतरों के खिलाफ राष्ट्रीय पहचान, संप्रभुता और पारंपरिक मूल्यों की रक्षा करने का वादा करती है। राष्ट्रवाद की ओर इस वैचारिक बदलाव से एकता और सहयोग के EU के मूल सिद्धांतों को चुनौती मिलती है।

ब्रेक्सिट कारक

यूनाइटेड किंगडम का EU छोड़ने का निर्णय, जिसे सामान्यतः ब्रेक्सिट के रूप में जाना जाता है, के EU के भविष्य के लिए गहरे प्रभाव रहे हैं। ब्रेक्सिट ने विघटन की संभावना के लिए एक मिसाल कायम की है, यह दर्शाते हुए कि कोई सदस्य राज्य संघ छोड़ सकता है। इसने अन्य देशों में यूरो-विरोधी आंदोलनों को प्रोत्साहित किया है, जिससे संभावित रूप से इसी तरह के जनमत संग्रह को बढ़ावा मिला है। ब्रेक्सिट वार्ता ने एक देश को EU से अलग करने की जटिलताओं और कठिनाइयों को उजागर किया, लेकिन उन्होंने स्वयं संघ के भीतर गहरे विभाजन को भी उजागर किया। UK के प्रस्थान ने EU की सुधार और बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होने की क्षमता के बारे में प्रश्न उठाए हैं, साथ ही इसके शेष सदस्य राज्यों को बनाए रखने की इसकी क्षमता के बारे में भी।

संस्थागत और संरचनात्मक चुनौतियाँ

EU की संस्थागत संरचना की अक्सर इसकी जटिलता, पारदर्शिता की कमी और लोकतांत्रिक घाटे के लिए आलोचना की जाती है। EU के भीतर निर्णय लेने की प्रक्रियाएं धीमी और बोझिल हो सकती हैं, जिससे सदस्य राज्यों में निराशा होती है। यूरोपीय संसद, जो सीधे चुनी जाती है, की तुलना में यूरोपीय आयोग और यूरोपीय परिषद, जहां सदस्य राज्यों की सरकारों का अधिक प्रभाव होता है, के पास सीमित शक्ति होने की धारणा है। यह संस्थागत **असंतुलन EU के प्रभुत्व को नौकरशाही अभिजात वर्ग द्वारा संचालित एक वास्तविक लोकतांत्रिक और प्रतिनिधि संस्था के बजाय के रूप में देखने की धारणा में योगदान कर सकता है। संस्थागत सुधार की मांगों का प्रतिरोध किया गया है, जिससे इन संरचनात्मक मुद्दों को प्रभावी ढंग से संबोधित करना चुनौतीपूर्ण हो गया है।**

वैश्वीकरण और बाहरी दबाव

वैश्वीकरण ने EU के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत की हैं। जबकि आर्थिक एकीकरण और वैश्विक व्यापार लाभकारी रहे हैं, उन्होंने सदस्य राज्यों को बाहरी आर्थिक झटकों और प्रतिस्पर्धा के लिए भी उजागर किया है। EU को संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और रूस जैसी प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ अपने संबंधों को नेविगेट करना चाहिए, जिससे कभी-कभी सदस्य राज्यों के बीच परस्पर विरोधी हित पैदा हो सकते हैं। व्यापार विवाद, सुरक्षा खतरों और भू-राजनीतिक तनाव जैसे बाहरी दबाव EU के भीतर आंतरिक विभाजनों को बढ़ा सकते हैं। बाहरी चुनौतियों के लिए एकजुटता से प्रतिक्रिया देने की EU की क्षमता इसके निरंतर एकीकरण और स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है।

मीडिया और सार्वजनिक धारणा की भूमिका

मीडिया EU की सार्वजनिक धारणा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मीडिया में EU के नकारात्मक चित्रण से यूरो-विरोधी भावनाओं को बल मिल सकता है और संघ की संस्थाओं में विश्वास कमजोर हो सकता है। लोकलुभावन नेता और दल अक्सर EU की आलोचनाओं को बढ़ाने के लिए मीडिया प्लेटफार्मों का उपयोग करते हैं, इसे एक दूरस्थ और गैर-जिम्मेदार संस्था के रूप में चित्रित करते हैं। गलत सूचना और फर्जी समाचारों का प्रसार भी EU की भूमिका और नीतियों की सार्वजनिक समझ को जटिल बनाता है। EU की सकारात्मक और सूचित सार्वजनिक धारणा बनाना, विघटन को बढ़ावा देने वाले आख्यानों का मुकाबला करने के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष

यूरोपीय संघ का विघटन पूर्व निर्धारित नहीं है, लेकिन इस पत्र में चर्चा किए गए कारक इसकी एकजुटता और स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां प्रस्तुत करते हैं। आर्थिक असमानताएं, राजनीतिक संप्रभुता के मुद्दे, सांस्कृतिक पहचान, आव्रजन, लोकलुभावनवाद, ब्रेक्सिट, संस्थागत चुनौतियां, वैश्वीकरण और मीडिया प्रभाव सभी उस जटिल परिदृश्य में योगदान करते हैं जिसे EU को नेविगेट करना है। इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सुधारों की आवश्यकता है जो आर्थिक सुधारों, राजनीतिक संवाद, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, और पारदर्शिता और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता को शामिल करता है। यूरोपीय संघ का भविष्य बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होने, सदस्य राज्यों के बीच मतभेदों को सुलझाने और एकता और एकीकरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करने की इसकी क्षमता पर निर्भर करता है।

सारांश

यह शोध पत्र यूरोपीय संघ के संभावित विघटन में योगदान देने वाले विभिन्न कारकों की जांच करता है। इसमें सदस्य राज्यों के बीच आर्थिक असमानताओं, राजनीतिक संप्रभुता की चिंताओं, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान के मुद्दों, और आव्रजन और सीमा नियंत्रण की चुनौतियों को रेखांकित किया गया है। ब्रेक्सिट द्वारा उदाहरण के रूप में लोकलुभावनवाद और राष्ट्रवाद का उदय, EU की एकता के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा करता है। EU के भीतर संस्थागत और संरचनात्मक चुनौतियाँ, वैश्वीकरण से बाहरी दबावों के साथ मिलकर, संघ की स्थिरता को और जटिल बनाती हैं। यह पत्र यूरोपीय संघ के निरंतर एकीकरण और एकता को सुनिश्चित करने के लिए आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सुधारों के माध्यम से इन मुद्दों को संबोधित करने के महत्व को रेखांकित करता है।

REFERENCES

1. भट्टाचार्य, राजेश्वरी। *यूरोपीय संघ: एकीकरण और चुनौतियाँ*
2. चटर्जी, अमितव। *यूरोपीय एकीकरण में समकालीन मुद्दे: यूरोपीय संघ की पहचान संकट*
3. कुमार, रवि। *यूरोपीय संघ की राजनीति: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य*।
4. मेहता, नंदिनी। *वैश्वीकरण और यूरोपीय संघ: एक तुलनात्मक अध्ययन*
5. रॉय, पी. के। *यूरोपीय संघ: राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक आयाम*
6. शर्मा, संजय। *ब्रेक्सिट और यूरोपीय एकीकरण का भविष्य*
7. सिंह, अरविंद। *यूरोप में लोकलुभावनवाद और राष्ट्रवाद: यूरोपीय संघ के लिए चुनौतियाँ*